असार संसार का सार...

व्यक्ति से व्यक्तित्व बड़ा या
फिर बड़ा है कर्म।
बड़ी नित्य वह चेतना, जो बूझे
इसका मर्म।।

वर्तमान असार भौतिक संसार में 'मानव जीवन चक्र' का अवलोकन करने पर बोध होता है कि धर्म-कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क, कार्य-व्यवहार में हर व्यक्ति अपने लिए स्थान व अस्तित्व को तलाशता हुआ नज़र आता है। परन्तु जीवन पर्यन्त अपने अस्तित्व व स्थान को तलाशता जीवन के अन्त को प्राप्त हो जाता है। परन्तु अस्तित्व व स्थान पाने के उसके प्रयास अन्तहीन ही रहते हैं। वह कभी भी सम्पूर्ण सन्तुष्ट नहीं होता जो कहे अब बस....।

वास्तव में वर्तमान समय संसार में यद्यपि व्यक्ति तन-मन-धन-जन से सम्पन्न है तथा साधन-संसाधन एवं तकनीक उसे सरल व समुचित रीति से सहज ही उपलब्ध हैं, लेकिन एक 'यक्ष' सदैव मनुष्य के सामने खड़ा रहता है कि उसे और चाहिए, असीमित चाहिए। परन्तु क्या चाहिए? कितना चाहिए? क्यों चाहिए? कैसे मिलेगा? कहाँ से मिलेगा? सदैव इसी उधेड़-बुन के ताने-बाने में उलझा सा रहता है। तन के लिए नाना प्रकार के खाद्य पदार्थ, औषधि, चिकित्सक एवं चिकित्सालय उपलब्ध हैं। फिर भी तन रोग ग्रस्त है, सब कुछ होते मन में संतोष नहीं, चाहिए-चाहिए के फेरे में मन अभाव ग्रस्त है। सर्व सम्बन्धों के जीवन में रहते भी सम्बन्धों का सुख नहीं अपितु मानव अभाव, तनाव, टकराव, दुराव की स्थिति में जीवन जी रहा है। सम्बन्धों से भिन्न हर कोई अपने लिए बाहर के साधनों व स्रोतों से प्रेम, सुख, शांति, सहयोग व आनंद को ढूंढ़ता फिर रहा है। एक नेत्रहीन व्यक्ति की भांति टटोलता फिर रहा है कि शायद कहीं से उसे कुछ मिल जाये।

वास्तव में इन सभी उलझनों का कारण है - उस शक्ति, चेतना या सत्ता से अपरिचित्त व अनभिज्ञ होना जो इन सभी साधनों और संसाधनों, पदार्थों तथा सम्बन्धों का उपयोग, प्रयोग और उपभोग करती है। हमें ज्ञात है कि किसी भी कार्य अथवा क्रिया को करने या होने के लिए समग्र व समुचित रूप से ऊर्जा की आवश्यकता होती है। बिना ऊर्जा के कोई कार्य अथवा क्रिया का होना सम्भव नहीं है। हर ऊर्जा का एक स्रोत तथा अनेक प्रकार के माध्यम होते हैं, जिनके द्वारा इस चराचर जगत के सभी कार्य संचालित होते हैं। इस जगत में तीन भिन्न प्रकार की सत्तायें समयानुसार कार्य करती हैं, जिन्हें हम भौतिक, अभौतिक और पराभौतिक के रूप में समझते या मानते हैं। भौतिक ऊर्जा या सत्ता को हम पाँच तत्वों के रूप अथवा नाम से जानते हैं यथा - जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश।

इन पाँचों तत्वों में विद्यमान अर्धचेतन ऊर्जा को अभौतिक सत्ता (चेतना) प्रयोग, उपभोग एवं उपयोग करती है। जिसको हम आत्मा के नाम या सम्बोधन से संभवतः जानते हैं, परिचित हैं। तीसरी जो पराभौतिक सत्ता (शक्ति) जो पूरे ब्रह्माण्ड को संचालित, आन्दोलित तथा रूपान्तरित करने की शक्ति, विधि व आधार प्रदान करती है। उस पराभौतिक चेतना को हम सर्वशक्तिमान 'परमात्मा' ईश्वर मानते हैं जो सर्वोपरि, सर्वस्व, सत्-चित्त-आनंद रूप है।

ऊर्जा का परिचय व पहचान

ऊर्जा भौतिक-अभौतिक तथा पराभौतिक जिस भी स्वरूप में है, उसे इन चर्म चक्षुओं के द्वारा नहीं देखा जा सकता। जबकि भौतिक ऊर्जा को देह की कर्मेन्द्रियों के माध्यम से, अभौतिक को प्रकम्पनों द्वारा तथा पराभौतिक को आन्तरिक अनुभूतियों के माध्यम से हम महसूस करते हैं। सभी प्रकार की चेतनाओं में विशेष शक्ति व निजी गुण होते हैं। उसी विशेषता के आधार पर ब्रह्माण्ड में तीन प्रारूपों में ऊर्जा क्रियान्वित होती है।

ऊर्जा (चेतन सत्ता की शक्ति) की पहचान है कि जिस स्थान से जायेगी वहाँ भी परिवर्तन होगा और जहाँ जोयगी वहाँ भी परिवर्तन अवश्य होगा ही होगा। उदाहरण स्वरूप जल तत्व में शीतलता के रूप में, अग्नि तत्व में ऊष्मा (तपन, गर्माहट) के रूप में, वायु तत्व में गंध रूप के रूप में, आकाश तत्व में ध्वनि तरंगों तथा प्रकम्पनों के रूप में तथा पृथ्वी तत्व में प्रतिक्रिया के प्रकम्पनों (भूकम्प) के रूप में शरीर के भिन्न अंगों व इन्द्रियों द्वारा हम अनुभव करते हैं, आँखों से देख नहीं सकते।

जो भी तरंगें हमारे शरीर के साथ-साथ या बिना शरीर को स्पर्श-संपर्क किये हमारी मनोदशा व दिशा को परिवर्तित कर दे वह अभौतिक सत्ता (चेतना, ऊर्जा) द्वारा ही होता है। जैसे मुख से निकले बोल दिखते नहीं लेकिन किसी को दुःखी या खुश कर देते हैं। आँखों द्वारा मानसिक भावों के प्रकम्पन व्यक्ति को भयभीत अथवा प्रसन्न कर देते हैं। वास्तव में इन सभी भौतिक सत्ताओं व शक्तियों को संचालित-आन्दोलित करने वाली अभौतिक चैतन्य सत्ता है। जिसे आध्यात्मिक भाषा में 'आत्मा' नाम से जाना अथवा सम्बोधित किया जाता है। दृश्य जगत के पाँचों तत्व निरन्तर रूपांतरित व स्थानांतरित होते रहते हैं, किन्तु अभौतिक चेतना (आत्मा) स्थानान्तरण तो होता है परन्तु रूपांतरण नहीं होता। संभवतः इसी कारण धर्मज्ञानुसार आत्मा को अजर-अमर-अविनाशी की संज्ञा दी गई है।

अब हम दोनों ऊर्जाओं को मैं और मेरा मान लें। मेरा अर्थात् तत्वों सहित जो भी दिखता जो मेरे पास है या जो मैं पाना चाहता हूँ, बनाना चाहता हूँ या मेरी समस्त दृश्य, अदृश्य प्राप्तियां। मैं आत्मा देह के माध्यम से कोई इन्द्रिय द्वारा सुख-दुःख, लाभ-हानि, आदान-प्रदान, क्रिया-कलापों के रूप में इन सभी क्रियाओं का अनुभव करती हूँ। वस्तुतः पाँच तत्वों से बने इस देह में तत्वों की समस्त ऊर्जा को मैं आत्मा, चैतन्य सत्ता ही प्रयोग-उपयोग, उपभोग एवं कार्यान्वित करती हूँ।

व्यक्ति (आत्मा) का लक्ष्य

अपने सम्पूर्ण जीवन काल में व्यक्ति को देह के लिए रोटी-कपड़ा और मकान तथा जीवन पर्यन्त सुख-शांति, समृद्धि प्रेम तथा सम्मान चाहिए। अपने जीवन में यदि हम आत्मिक जीवन मूल्यों को चिरस्थाई बनाना चाहते हैं तो पहले स्वयं के 'सत्य' चैतन्य स्वरूप को पहचानना व समझना होगा। फिर स्वयं की वास्तविक ऊर्जा-क्षमता व गुण धर्म, कर्म को सही दिशा में प्रयोग, उपयोग व उपभोग करके अपने जीवन में सुख, समृद्धि, शांति, आनंद, प्रेम, सहयोग की श्रेष्ठ दशाओं का निर्माण कर स्वयं व स्वजनों के जीवन के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

इस लक्ष्य को पाने के लिए सत्य ज्ञान की आवश्यकता है और सत्य ज्ञान हमें पराभौतिक सत्ता अर्थात् परमपिता परमात्मा के सानिध्य एवं मार्गदर्शन से ही प्राप्त हो सकता है, किसी मनुष्य से नहीं। परमपिता परमात्मा 'शिव'(कल्याणकारी) जोकि इस असार-संसार से परे, परमधाम (ब्रह्मलोक) ब्रह्ममहतत्व के निवासी हैं, सत् चित्त आनंद (सच्चिदानन्द) स्वरूप हैं, वे ही मानव के, सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान (सूचना व समझ) देते हैं। परमात्मा से प्राप्त ज्ञान (सूचना) और स्वयं के कर्म द्वारा प्राप्त अनुभवों द्वारा हर मनुष्यात्मा अपने जीवन में श्रेष्ठतम व्यक्तित्व का निर्माण कर सकती है तथा श्रेष्ठ चरित्र द्वारा जीवन को सुख-शांति, सम्मान पूर्वक उत्तम दैवी जीवन को आनन्दपूर्वक जी सकती है।

अन्ततः सार रूप में देखें तो व्यक्ति (चेतन सत्ता आत्मा) अपने ही कर्मों के द्वारा स्वयं के व्यक्तित्व का निर्माण करता है और उसी व्यक्तित्व अनुसार उसके कर्म होते हैं। उन्हीं कर्मों को व्यक्ति, सुख-दुःख, लाभ-हानि, अभाव-प्रभाव, तनाव-टकराव के रूप में भोगता (अनुभव करता) है।
व्यक्ति से व्यक्तित्व बड़ा ..... कर्म।
बड़ी 'नित्य' वह 'चेतना' ..... मर्म।।

- ब्र.कु. रमेश,त्रिलोकपुरी,दिल्ली।

बहजोई-डिवाई(उ.प्र.)। विश्व कल्याणी भवन के प्रथम वार्षिकोत्सव का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए संभल जिलाधिकारी अविनाश कृष्ण सिंह, वरिष्ठ समाजसेवी, व्यापार मंडल अध्यक्ष अरविंद वार्ष्णेय, कपिल वार्ष्णेय, ब्र.कु. कुसुम, ब्र.कु. अलका तथा ब्र.कु. रचना।

मुकेरियां-पंजाब। सेवाकेन्द्र पर आयोजित नि:शुल्क मेडिकल कैम्प के दौरान ऑर्थो स्पेशलिस्ट डॉ. स्वप्निल शर्मा व कार्डियो स्पेशलिस्ट डॉ. आशुतोष शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. गीता,नवसारी गुजरात तथा ज्ञानी माता।

हेली मंडी-हरियाणा। ज्ञानचर्चा के पश्चात् डी.एस.पी. भारती डबास को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. संतोष।

राँची-झारखण्ड। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. निर्मला, आर्किटेक्ट अनिल जी तथा सी.ए. एंजेला गोयंका।

जुर्हेरा-भरतपुर(राज.)। मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती के पुण्य स्मृति दिवस पर पुष्पांजलि अर्पित करने के बाद चित्र में डॉ. महेशचंद शर्मा, ब्र.कु. प्रीति तथा अन्य।

जम्मू-बी.सी. रोड। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा बी.पी.सी.एल.,बाहू प्लाज़ा में आयोजित 'मैनेजिंग स्ट्रेस इन कॉर्पोरेट' विषयक वर्कशॉप में उपस्थित हैं ब्र.कु. रविन्दर, राजेश शर्मा,रिटेल हेड,बी.पी.सी.एल., ब्र.कु. रमा, ब्र.कु. कान्ता तथा बी.पी.सी.एल. स्टाफ।